International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 06-04-2020; Accepted: 07-05-2020; Published: 20-05-2020
www.socialsciencejournal.in
Volume 6; Issue 3; 2020; Page No. 28-32

राष्ट्र निर्माता बाबा साहब भीमराव राम जी अम्बेडकर

प्रवेश कुमार
सहायक प्रोफेसर, तुलनात्मक राजनीति और राजनीतिक सिद्धांत, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली, दिल्ली, भारत

सारांश
आंबेडकर ने सम्पूर्ण भारत के लिए काम किया ना की किसी एक वर्ग या समाज के लिए इसी लिए जैसे - जैसे अंबेडकर पर काम हो रहा वैसे-वैसे उनके जीवन के कई आयाम निकल के आ रहे है। देश एवं दुनिया अम्बेडकर को सविधान निर्माता के रूप में जानती हैं या फिर वे कमज़ोर , वंचित वर्गो की एक मजबूत आवाज़ के रूप में ही पहचने जाते है लेकिन अम्बेडकर इससे कही ज़्यादा थे वे एक अर्थशास्त्री के रूप में ,एक किसान,मजदूर नेता के रूप में वही अम्बेडकर एक महिला उद्धारक के रूप में इससे भी कही अधिक देश में उद्योगिक प्रतिमान कैसे हो इस रूप में एक विकासौन्मुखी व्यक्ति के रूप में वही देश की अखंडता एवं सामरिक ,विदेश नीति को अपने ज़हन में रखकर काम करने वाले रणनीतिकार के रूप में

मूल शब्द: भीमराव राम जी अम्बेडकर, विकासौन्मुखी, देश

प्रस्तावना

डॉ अम्बेडकर जिनको दलितों का मसीहा कहा जाता हैं क्या वास्तव मैं वो सिर्फ दलित समाज के ही नेता थे ? इसका विश्लेषण करने की आवश्यकता है की अंबेडकर ने क्या केवल वंचितों, दलितो , गिरिजनों मात्र की बात की थी या सम्पूर्ण भारत की इसका अध्ययन करने पर या ज्ञात होता हैं की अम्बेडकर मात्र वांचितो, दलितों के नेता नहीं थे बल्कि उनके चिंतन मे पूरे समाज की बात थी | जब हम आंबेडकर को गंभीरता से पढ़ते हैं तो पाते हैं की आंबेडकर ने सम्पूर्ण भारत के लिए काम किया ना की किसी एक वर्ग या समाज के लिए इसी लिए जैसे - जैसे अंबेडकर पर काम हो रहा वैसे-वैसे उनके जीवन के कई आयाम निकल के आ रहे है। देश एवं दुनिया अम्बेडकर को सविधान निर्माता के रूप में जाना जाता हैं वही कमज़ोर , वंचित वर्गो की एक मजबूर आवाज़ के रूप में उनकी पहचान है। जानता है वही वे एक अर्थशास्त्री के रूप मे भी जाने जाते है आख़िरकार उनकी पढ़ाई का मुख्य विषय तो अर्थशास्त्र ही था। एक किसान,मजदूर नेता के रूप में वही अम्बेडकर को महिला उद्धारक एवं समाज के कमज़ोर, कमेरे वर्ग के प्रखर स्वर। भारत को संविधान देने वाले महान नेता डा. भीम राव अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को महू मध्य प्रदेश मे सेना की छावनी में हुआ था, इनके पिता सेना मे सूबेदार के पद पर कार्यरत थे,डा. भीमराव अम्बेडकर के पिता का नाम रामजी मालोजी सकपाल और माता का भीमाबाई था। अपने माता-पिता की चौदहवीं संतान के रूप में जन्में डॉ. भीमराव अम्बेडकर जन्मजात प्रतिभा संपन्न थे,इनका जन्म महार जाति में हुआ था जिसे लोग अछूत और बेहद निचला वर्ग का मानते थे। बचपन में अंबेडकर के परिवार के साथ सामाजिक और आर्थिक रूप से गहरा भेदभाव किया जाता था जिसका प्रभाव बालक भीम पर भी पड़ा , अंबेडकर के बचपन का नाम रामजी सकपाल था।

1894 में भीमराव अंबेडकर जी के पिता सेवानिवृत्त हो गए और इसके दो साल बाद, अंबेडकर की मां की मृत्यु हो गई, बच्चों की देखभाल उनकी चाची ने कठिन परिस्थितियों में रहते हुये की। रामजी सकपाल के केवल तीन बेटे, बलराम, आनंदराव और भीमराव और दो बेटियाँ मंजुला और तुलसा ही इन कठिन हालातों मे जीवित बच पाए, अपने भाइयों और बहनों मे केवल अम्बेडकर ही स्कूल की परीक्षा में सफल हुए और इसके बाद बड़े स्कूल में जाने में सफल हुये। अपने एक देशस्त ब्राह्मण शिक्षक महादेव अंबेडकर जो उनसे विशेष स्नेह रखते थे के कहने पर अम्बेडकर ने अपने नाम से सकपाल हटाकर अंबेडकर जोड़ लिया जो उनके गांव के नाम "अंबावडे" पर आधारित था। डॉ. आंबेडकर का जन्म कियूंकी दलित परिवार में हुआ इसलिए उत्पीडन भी उसी के साथ प्रारम्भ हो गया। यहा पर कुछ घटनाओ का उल्लेख करना जरुरी हैं जिसने बालक भीम के मन को अंदर तक झकझोल दिया था,जब बालक भीम अपनी माँ के साथ बाजार में जाता हे तो वो देखता किस प्रकार उसकी माँ के साथ दुकानदारो का व्यव्हार होता हैं ,स्कूल में जब पढ़ने जाते हैं तब उन्हें कक्षा में बैठने नहीं दिया जाता , ब्लैक बोर्ड को वो छू(स्पर्श) नहीं सकते , पानी के घड़े को छू नहीं सकते इस करण पानी पीने के लिए घंटो अपने साथ पढ़ने वाले किसी किसी स्वर्ण जाति के सहपाठी का इंतज़ार करना पड़ता की वो आ कर पानी पिलाये,ऐसे तमाम प्रतिबंधों को सहते हुए अम्बेडकर ने अपनी तमाम शिक्षा को पूर्ण किया। अम्बेडकर अपने एक शिक्षक केलुसकर के भी अधिक प्रिय थे इसी शिक्षक के बड़ोदा रियासत के राजा को आग्रह करने के परिणाम स्वरूप अंबेडकर को बड़ोदा रियासत की छात्रवृति प्राप्त हुई और वे विदेश पढने गए जब वे वह से पढ़ कर ये तो सोचा देश अब तो बदल गया होगा उस प्रकार का उत्पीड़न श्याद समज मे अब नहीं होगा पर अंबेडकर को बड़ा दुख हुआ की समाज की स्थिति मे रती भर भी बदलाव नहीं आया था। अम्बेडकर भारत आकार अपने अनुबंध अनुसार बड़ोदा रियासत के यहा नौकरी पर लगे (छात्रवृति देते समय बड़ोदा रियासत और अम्बेडकर के बीच अनुबंध हुआ था की भारत आकर वो बड़ोदा रियासत को अपनि सेवा को प्रदान करेगा)। अम्बेडकर की नियुक्ति बरोदा रियासत के रक्षा सचिव(Defiance secretary) के पद पर हुई परंतु फिर भी बरोदा मे उनके सामने रहने – खाने की अधिक समस्या आ खड़ी हुई बड़ोदा मे भी समाज का ताना बन उसी प्रकार का था जिस से अम्बेडकर अपनी बाल्यकाल की अवस्था मे मुखतिब हुए थे। बड़ोदा मे उनको रहने को कोई घर नहीं मिला, दफ्तर मे चपरासी पानी नहीं पिलाता, दफ्तर मे उनके द्वरा छुई किसी फाइल को आसानी से छूता नहीं हैं, अपने कर्मचारी साथियो के दूर व्यवहार की शिकायत अम्बेडकर ने रियासत के राजा को की पर उन्होने ने भी कोई सहयाता करने से इंकार कर दिया इस स्थिति से तंग आ कर उन्होंने ने जल्द ही बरोदा रियासत की नौकरी छोड़ मुम्बई आकर Sydenham College में प्राध्यापक पद पर पढ़ाने लगे पर अपने साथ काम करने वाले शिक्षको के दुर-व्यव्हार के कारण यहाँ भी उनको नौकरी छोड़नी पड़ी कहने को तो ये एक बड़ा प्रतिष्ठित महाविद्यालय था परंतु यहा भी अम्बेडकर का निम्न वर्ण का होने के कारण काफी उत्पीड़न हुआ, वो शिक्षको के बने स्टाफ रूम मे बैठ नहीं सकते थे, उनके द्वरा प्रयोग आने वाला पानी का मटका वो नहीं छु सकते थे , अलग बैठने और पानी की व्यवस्था ने अम्बेडकर को अंदर तक तोड़ दिया

और उनको मजबूर कर दिया की वो इस नौकरी को छोड़ दे और अम्बेडकर ने ये नौकरी भी छोड़ दी, उन्होने फिर वकालत प्रारम्भ की बाबा साहब अम्बेडकर ने 14 डिग्री ली थी जिसमे एक "बार एट लॉ " की भी थी।

बाबा साहब को वकालत के पेशे मे भी सफलता नहीं मिल सकी कियूकी जाति की मकड जाल से देश के न्याय देने वाले न्यायाधीश भी कहा अलग थे वो अम्बेडकर को कभी ध्यान से नहीं सुनते थे बल्कि उनका उपहास और करते थे। दलितों के अतिरिक्त किसी अन्य जाति का व्यक्ति उनके पास अपना केस नहीं ले कर आता था और जो दलित जातियो के लोग केस लाते भी थे वो पैसे नहीं दे पाते थे सो वकालत कैसे चले,अम्बेडकर के इस दर्द को कुछ पंक्तियो मे आसानी से बाया किया जा सकता हैं।

कोई चीखा अगर हैं , तो कोई तड़पन सही होगी |
कोई यूही नहीं रोता कोई तो बात होगी ||

अम्बेडकर ने हिन्दू वर्ण व्यवस्था को समझा और जाना और अपने साथ हुए सारे उतपीड़न के पीछे ये हिन्दू जाति एवं वर्ण व्यवस्था हैं इसको माना इसीलिए अम्बेडकर ये निर्णय किया की बिना इस जाति व्यवस्था को समाप्त किये हम समाज के दलित , दमित , वंचित समाज का भला नहीं कर सकते हैं।

अम्बेडकर ने तीन प्रकारो से दलित मुक्ति आंदोलन चलाया

(१).पत्र पत्रिका , साहित्य माध्यम से:- बहिस्कृत भारत,मूकनायक जैसे पत्र

(२).प्रत्यक्ष आंदोलन :- महाड़ आंदोलन (चावदार तलाब के पनि को पीने का आंदोलन) , मनुस्मृति दहन , कालाराम मंदिर प्रवेश ऐसे तमाम आंदोलनो को अंबेडकर ने सीठा जनता को जोड़ जन आंदोलन को खड़ा किया महाड़ का चावदार तलब मे पानी पीने के अधिकार की लड़ाई और मनुसिमृति का दहन इस कड़ी की ऐतिहासिक घटना हैं।

(३). संगठनों का निर्माण फिर दल का निर्माण :- समता सैनिक दल , भारतीय मजदुर दल , अनुसूचित जाति संघ , रिब्लिकन पार्टी ऑफ़ इंडिया

ये तीनों माध्यमो के आधार पर हम अम्बेडकर को समझ सकते है ये तीन माध्यम उन्होंने विभिन्न चरणों मे अपनाया।

अम्बेडकर कहते हैं

" पहले शोषित समाज को उनके दर्द का अहसास कराओ फिर बताओ ये कष्ट हे कियू हैं , इसका कारण क्या हैं , फिर उससे मुक्ति का हल बताओ , फिर एक विचार के तले उनको संगठित करो , अब इस संगठन को राजनैतिक दल के रूप मे रूपांतरित करो , और अंतिम रूप इस दल को सत्ता मे परिवर्तित कर दो "

बाबा साहब अंबेडकर ने केवल ये बात मात्र दलितो के लिए नहीं की समाज मे किसी भी जन आंदोलन को खड़ा करने की ये कारगर पद्धति हैं| इस लेख में मैंने डॉ.अम्बेडकर के जीवन के विभिन्न पक्षों की बात की है।

राष्ट्रा निर्माता के रूप मे अम्बेडकर

बाबा साहब एक राष्ट्र निर्माता हैं कियूकी उन्हों ने केवल और केवल दलितो पिछड़ो के लिए कम नहीं किया बल्कि इस देश के तमाम लोग जिसमे किषान, मजदूर , पिछड़े , दलित , देश की आधी आबादी महिलाओं के लिए भी काम किया हिन्दू कोड़ बिल को क्या महिलाए भूल सकती हैं ,इसके अतिरिक्त बाबा साहब ने सम्पूर्ण समाज के लिए बहुत से कार्य किये।

डॉ अंबेडकर के व्यक्तित्व के कुछ पक्ष इस प्रकार हैं

डॉ अम्बेडकर एक अर्थशास्त्री के रूप मे

अर्थशास्त्र विषय तथा आर्थिक मुद्दों का डॉ. अम्बेडकर के जीवन मे एक महत्वपूर्ण स्थान था। अपने विधार्थी जीवन से ही वे अर्थशास्त्र विषय से प्रभावित थे। उन्होंने अपनी स्नातक से लेकर पी. एच. डी तक की पढाई अर्थशास्त्र विषय में ही की है और वह भी दुनिया के श्रेष्ठतम विश्वविद्यालयों से,लेकिन यह जानना बेहद जरुरी है कि डॉ. अम्बेडकर एक महान अर्थशास्त्री थे ,अर्थशास्त्र के विभिन्न पहलुओ पर उनके शोध उल्लेखनीय है, लेकिन डॉ. अम्बेडकर को केवल दलितों एवं पिछडों के मसीहा तथा भारतीय संविधान निर्माता के रूप प्रस्तुत किया जाता है।

डॉ. अम्बेडकर की पहचान यदि एक अर्थशास्त्री के रूप में नही बन पायी तो इसका कारण यह है कि 1923 में भारत लौटने के बाद वे देश की सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था को बदलने के लिए समर्पित हो गए और अर्थशास्त्र विषय तथा आर्थिक मुद्दों पर अपना शोध जारी नही रख पाए,उन्होंने देश में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करना अधिक जरुरी समझा , इसमें उनकी अर्थशास्त्र की समझ की छाप स्पष्ट नजर आती है। उनका मानना था कि "आर्थिक उत्थान के बिना कोई भी सामाजिक एवं राजनीतिक भागीदारी संभव नही होगी |"

डॉ. अम्बेडकर ने भारतीय मुद्रा (रुपए) की समस्या, महंगाई तथा विनिमय दर, भारत का राष्ट्रीय लाभांश, ब्रिटिश भारत में प्रांतीय वित्त का विकास, प्राचीन भारतीय वाणिज्य, ईस्ट इंडिया कम्पनी का प्रशासन एवं वित्त, भूमिहीन मजदूरों की समस्या तथा भारतीय कृषि की समस्या जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर शोध ही नहीं किया बल्कि इन मुद्दों से सम्बंधित समस्याओं के तर्किक एवं व्यावहारिक समाधान भी दिए |

20वीं सदी के शुरुआत में विश्व के लगभग सभी प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों ने डॉ. अम्बेडकर के अर्थशास्त्र विषय की समझ तथा उनके योगदान को सराहा और उनके शोध पर महत्वपूर्ण टिप्पणी की अभी हाल के दिनो मे नोबल पुरस्कार से सम्मानित अर्थशास्त्री आमर्त्य सेन ने कहा " डॉ अंबेडकर अर्थशास्त्र के विषय मे मेरे पिता हैं " । डॉ. अम्बेडकर सन 1913 में बॉम्बे के Elphinstone कॉलेज से अर्थशास्त्र में स्नातक की पढाई की , डॉ. अम्बेडकर की प्रतिभा को पहचानते हुए बड़ौदा के महाराजा ने उनकी विदेश की पढाई के लिए छात्रवृत्ति प्रदान की जिसकी वजह से वे सन 1915 में कोलंबिया यूनिवर्सिटी से अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर तथा सन 1917 में पी. एच. डी. शोध पूरा कर पाए , उनकी एम. ए. की थीसिस का विषय 'प्राचीन भारतीय वाणिज्य' (Ancient Indian Commerce) था, जो कि प्राचीन भारतीय वाणिज्य के प्रति उनकी समझ को दर्शाता है ,इस शोध ग्रंथ में उन्होंने प्राचीन भारतीय वाणिज्य की समस्याओं को रखा तथा उनके संभावित कारगर समाधान भी बताए | इसी वर्ष "ईस्ट इंडिया कम्पनी के प्रशासन एवं वित्त" (Administration and Finance of East India Company) नामक उनका एक लेख प्रकाशित हुआ जिसकी काफी सराहना की गई।

सन 1917 में कोलंबिया यूनिवर्सिटी ने उन्हें पी. एच. डी. की उपाधि दी , उनकी पी. एच. डी. थीसिस "The National Dividend of India - A Historical and Analytical Study वास्तव में एक ऐतिहासिक शोध था। सन 1918 से 1920 तक डॉ. अम्बेडकर बॉम्बे के Sydenham College में राजनीतिक अर्थशास्त्र के प्रोफेसर रहे , बतौर प्रोफेसर उन्होंने अपने विधार्थियो को भारतीय अर्थव्यवस्था की सभी आर्थिक समस्याओं से सम्बंधित मुद्दों को समझाया एवं उनके व्यवहारिक समाधान भी बताया।

बाबा साहब अम्बेडकर की आर्थिक समस्यओं के प्रति व्यवहारिक सोच थी, वे मानते थे कि भारत के पिछड़ेपन का मुख्य कारण भूमि-व्यवस्था के बदलाव में देरी है, इसका समाधान लोकतांत्रिक समाजवाद है जिससे आर्थिक कार्यक्षमता एवं उत्पादकता में वृद्धि होगी तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था का कायापलट भी संभव होगा,आर्थिक समस्याओं के प्रति उनके दृष्टिकोण की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि वे अहस्तक्षेप (Laissez-faire) तथा वैज्ञानिक समाजवाद (Scientific Socialism) की वे निंदा करते थे।

डॉ. अम्बेडकर ने आर्थिक एवं सामाजिक असमानता पैदा करने वाली पूंजीवादी व्यवस्था को ख़त्म करने की पुरजोर वकालत की , सन 1920 में डॉ. अम्बेडकर बॉम्बे के कॉलेज से प्रोफेसर के पद को छोड़कर अपनी पढ़ाई के लिए लन्दन स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स गए , वहां उन्होंने एम. एस. सी. (अर्थशास्त्र) की पढ़ाई (1921) पूरी की ,उनकी एम. एस. सी. की थीसिस "ब्रिटिश भारत में इम्पीरियल वित्त के प्रांतीय विकेंद्रीकरण" (Provincial Decentralization of Imperial Finance in British India) को लन्दन स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स में स्वीकृत हुई | यह ब्रिटिश साम्राज्यवाद की वित्त व्यवस्था पर एकमात्र गहन शोध था |

इस शोध के माध्यम से डॉ. अम्बेडकर ने वित्तीय विकेंद्रीकरण की अवधारणा का प्रतिपादन किया , उनका मानना था कि वित्तीय विकेंद्रीकरण से सभी प्रांतों को लाभ होगा। आज के समय में भी उनके शोध का महत्व उतना ही है जितना कि ब्रिटिश शासन के दौरान था,आज भी विकेंद्रीकरण की वकालत करनेवाले बुद्धिजीवी केंद्र-राज्य वित्त बटवारे के मामले में राज्यों को वित्त की स्वायत्तता देने की मांग करते हैं।

सन 1923 में वे लन्दन स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स से ही डी. एस. सी. (अर्थशास्त्र) की डिग्री प्राप्त की,अपने डी. एस. सी. की थीसिस "The Problem of the Rupee - Its origin and its solution". में उन्होंने रुपए के अवमूल्यन की समस्या पर शोध किया, जोकि उस समय के शोधों में सबसे व्यवहारिक तथा महत्वपूर्ण शोध था, और आज भी यह भारतीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में प्रासंगिक है ,रुपए के अवमूल्यन को कम करने के लिए डॉ. अम्बेडकर द्वारा सुझाये गये उपाय आज भी उपादेय हैं। उनका विचार था कि टकसालों को समाप्त करके भारतीय अर्थव्यवस्था के आतंरिक मूल्य स्तर में गड़बड़ी रोकना तथा मुद्रास्फीति को कम करना संभव है ,उन्होंने माना कि सोने (Gold) को मूल्य का मानक होना चाहिए और मुद्रा की लोच इसी पर निर्भर होनी चाहिए,डॉ. अम्बेडकर द्वारा किये गए शोध आज के समय के लिए भी उपयुक्त हैं।

वर्तमान समय में भारतीय अर्थव्यवस्था की सभी सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं जैसे गरीबी, बेरोजगारी, महंगाई, पिछड़ापन, असमानता (व्यक्तिगत एवं क्षेत्रीय), विदेशी मुद्राओं के मुकाबले भारतीय मुद्रा (रुपए) का अवमूल्यन आदि आदि से सम्बंधित गंभीर विमर्श डॉ. अम्बेडकर के आर्थिक शोधों में देखा जा सकता है।

डॉ. अम्बेडकर भारतीय अर्थव्यवस्था को एक न्यायसंगत अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित करना चाहते थे, जिसमें समानता हो, गरीबी, बेरोजगारी और महंगाई ख़त्म हो, लोगों का आर्थिक शोषण न हो तथा सामाजिक न्याय हो , सामान्यत: ऐसा लग सकता है कि डॉ. अम्बेडकर ने यदि केवल अर्थशास्त्र को ही अपना करियर बनाया होता तो संभवत: वे अपने समय के दुनिया के दस प्रसिद्ध अर्थशास्त्रियों में से एक होते,लेकिन डॉ. अम्बेडकर का योगदान किसी भी अर्थशास्त्री से कहीं ज्यादा है।

डॉ. अम्बेडकर ने अर्थशास्त्र के सिद्धांतों और शोधों का भारतीय समाज के संदर्भ में व्यावहारिक उपयोग किया, शोध का जब तक अनुप्रयोग (एप्लीकेशन) न हो तब तक उसकी सामाजिक उपयोगिता संदिग्ध है। भारतीय समाज व्यवस्था को आमूल बदलकर डॉ. अम्बेडकर ने अर्थशास्त्र के उद्देश्यों को वास्तविक अर्थ में साकार किया ,उनका यह अविस्मर्णीय योगदान उनकी सशक्त सामाजिक-आर्थिक संवेदना और सामाजिक-आर्थिक गहन वैचारिकी का परिणाम हैं राज्य समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

डॉ अम्बेडकर ने बड़े उद्योग लगाने की वकालत की परंतु कृषि को समाज की रीड की हड्डी भी माना उद्योगिक विकास पर ज़ोर देने के साथ-साथ उनका यह भी कहना था की कृषि को नज़र अंदाज़ नहीं किया जाना चाहिए कियूकी कृषि से ही देश की बढ़ती आबादी को भोजन और उधोगो को कच्चा माल मिलता हैं,जब देश का तेज़ी से विकास होगा तब कृषि वह नीव होगी , जिस पर आधुनिक भारत की इमारत खड़ी की जाएगी ,इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अंबेडकर ने कृषि क्षेत्र के पुनर्गठन के लिए क्रांतिकारी कदम उठाने की वकालत अम्बेडकर कृषि योग्य भूमि के राष्ट्रीयकरण के प्रमुख पेरोकर थे,इस राष्ट्रीयकरण मैं जमीन मालिको को जमीन के एवज मे आनुपातिक मूल्य के ऋणपत्र जारी किए जाए।

1923 में बाबा साहब ने वित आयोग की बात की 5 वर्षो के अंतर पर वित आयोग की रिपोर्ट आनी चाहिए ,

भारत मे रिजर्व बैंक की स्थापना का खाका तेयार करने और प्रस्तुत करने का कार्य भी बाबा साहब अंबेडकर ने किया (1925 Hilton Young Commission)|

डॉ अम्बेडकर एक सामाजिक न्याय के पुरोधा के रूप मे

डॉ अम्बेडकर सामाजिक न्याय के पुरोधा के रूप मे जाने जाते हैं भारत मे सामाजिक न्याय की बात की जाए तो वो ये वर्षो पहले प्रारम्भ हो चुकी थी कबीर , रविदास , चोखेमाला , राजा राममोहन रॉय , फागु बांसोड़े , दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द , ज्योतिबा फुले , सावित्री बाई फुले ,साहू जी महाराज, रानाडे , डॉ केशव बलिराम हेडगेवार , माहत्मा गांधी , बाबा साहब अंबेडकर , संत गाडगे आदि सभी ने समाज को एक रस बनाने का अथक प्रयास किया । डॉ अम्बेडकर और सामाजिक न्याय को समझने से पूर्व ये सामाजिक न्याय हे क्या इसको समझते हैं अगर सामान्य अर्थो मे देखे तो सामाजिक न्याय समाज के वंचित , दलित , दमित समाज को समाज मे बराबरी मिले इसको ही सामाजिक न्याय कहा जाता हैं। सामाजिक न्याय शब्द का सर्वप्रथम सन 1840 मे सीसीली के पादरी , लुईगी टपरेल्ली डी एजेगीलियों द्वरा प्रयोग मे लाया गया था। 19सवी शताब्दी के अंत मे जब सामाजिक न्याय शब्द जब प्रसिद्ध हुआ तो सबसे पहले कृषि क्षेत्र से स्थंत्रित मजदूर वर्ग के लिए ये प्रयुक्त हुआ की “नई आम जनता” की अवश्यकताओ पर ध्यान देने के लिए इसका प्रयोग शासक वर्ग से एक अपील के रूप मे किया गया “सामाजिक न्याय का मूल आधार हैं समाज के वंचित ,शोषित और दिन-हीन वर्गो का उत्थान इसका प्रमुख उद्देश्य हैं मानव जाति को सामाजिक और आर्थिक शोषण व भेदभाव की पारंपरिक कैद से मुक्त करना हैं “।

भारत में सामाजिक न्याय को “आरक्षण” के रूप में समझा जाता है जिसमें कुछ लोगों का मानना है कि यह एक सामाजिक समस्या की ओर इशारा करती है , प्राचीन समय में हिन्दू सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत वर्ण ओर जाति व्यवस्था को कायम रखा गया, जिसमें व्यक्ति जन्म, व्यवसाय , रंग के आधार पर देखा व जाना जाता था, उस समय विद्यमान विभिन्न बुराइयों में से “अछूत” होने की एक प्रमुख समस्या थी, जिससे समाज का एक वर्ग जूझता रहता था जिन्हे बाद में “दलित” का नाम दिया गया इनको सार्वजनिक संसाधनो से दूर रखने का प्रयास किया जाता था, इन्हे समान्य जीवन जीने का हक नहीं था कुल मिलाकर इन्हे मुख्य धारा से दूर रखने का हर संभव प्रयास किया जाता था, वही दूसरी तरफ सामाजिक सुधारक के रूप में जाने जाने वाले लोगो ने इस प्राचीन और रूढ़िवादी व्यवस्था को दूर करने का हर संभव प्रयास किया उन्होने अछूतो की समस्या को उठाया जो सदियो से झेलते हुए आ रहे थे उन्होने एक ऐसे समाज की रूप रेखा तैयार की जो जातिविहीन हो उनका मानना था की अछूत की बुनियाद जाति व्यवस्था में छुपी हुई है और यह जाति व्यवस्था रूढ़िवादी समाज द्वारा निर्मित कि गयी है उनका मानना था की कोई भी सामाजिक सुधार आंदोलन तब तक सफल नही हो सकता जब तक जाति व्यवस्था को दूर नही किया जाता वे चाहते थे की जाति व्यवस्था को दूर करके अछूत और कमजोर वर्गो को समाज में मुख्य धारा से जोड़ा जाये और संविधान निर्माण के द्वारा उन्होने ऐसा किया भी, जिससे समाज मे तमाम भेदो को समाप्त किया जा सके। अम्बेडकर सामाजिक न्याय के लिए समाज में तीन मौलिक सिद्धांतों की मांग करते हैं जिसमें स्वतन्त्रता, समानता और बंधुत्व हैं, इन तत्वो का ठीक से पालन हो तो सामाजिक न्याय स्वत: समाज मे आ जाएगा।

डॉ अम्बेडकर सविधान निर्माता के रूप मे

डॉ. भीम राव राम जी अंबेडकर का संविधान निर्माण करने में महत्वपूर्ण योगदान रहा था . सिर्फ बाबा साहब का योगदान ही नहीं , बल्कि प्रमुख योगदान ही बाबा साहब का था इस बात का स्पष्टीकारण सविधान सभा की आम चर्चा मे प्रमुखता से उभर के आया। ड्राफ्टिंग कमिटी के अध्यक्ष रहते संविधान को बनाने का काम डॉ अम्बेडकर ने किया इसका पूर्ण और विस्तार से वर्णन सविधान सभा की अंतिम प्रस्तुतिकरण के उपरांत चर्चा मे मिलता हैं , सविधान सभा की ड्राफ्टिंग कमेटी के सदस्य अल्लादिन कृष्ण अय्यर संविधान सभा में बतात्ते हैं की संविधान डॉ आंबेडकर ने ही लिखा हैं - वे कहते हैं " वैसे तो ड्राफ्टिंग कमिटी में

सात लोग थे पर जिसमे एक की मृत्यु हो गई , एक मध्यप्रदेश के थे वो कभी आते नहीं थे , दो लोग अमेरिका चले गए , एक अक्सर बीमार रहते थे , और लोग भी कभी कभी ही आते थे ऐसे में ड्राफ्टिंग का सारे कार्य का भार केवल आंबेडकर के कंधो पर ही आ गया था , जो उन्होंने बखूबी किया

सविधान निर्माण मे उनकी भूमिका की अधिका-धिक प्रशंसा संसद ने की और देश के राष्ट्र पति राजेन्द्र प्रसाद ने विषेशस्कर बाबा साहब का धन्यवाद किया की इतने कम समय मे इतना बड़ा सविधान लिख कर सदन मे पेश कर दिया जो कबीले तारीफ हैं।

महिलाओ के अधिकारो को लेकर

मैं किसी भी समाज की तरक्की उस समाज की महिलाओ की तरक्की मे देखता हु “ - डॉ. अम्बेडकर

बाबा साहब भीम राव अम्बेडकर ने भारत की तमाम महिलाओ के मुक्तिदाता हैं परंतु अफसोस इस बात का हे की अम्बेडकर को तमाम महिलाए ही अपना नहीं मानती हैं कभी महिला आंदोलन का एक बड़ा प्रतीक बाबा साहब अम्बेडकर नहीं बन पाये उसके पीछे भरत के लोगो का संकीर्ण मानसिकता का होना रहा जिस ने अम्बेडकर को दलित अस्मिता की पहचान से कभी भर होने ही नहीं दिया। अम्बेडकर ने अपने जीवन कल मे तमाम लेखो के माध्यम से महिलाओ की समस्या को पुर ज़ोर तरीके से उठाया रीडल आफ वुमेन , नारी एवं प्रतिक्रांति , हिन्दू नारी का उत्थान एवं पतन ऐसे तमाम लेख अम्बेडकर के द्वारा समय –समय पर लिखे गए , हिन्दू कोड बिल की मांग को महिलाए कैसे भूल सकती हैं जिसके ना लागू होने के कारण बाबा साहब अपने मंत्री पद तक को छोड़ देते हैं। अम्बेडकर ने नारी शिक्षा पर बहुत ज्यादा ज़ोर दिया इसी लिए 1913 मे न्यूयार्क मे एक भाषण देते उन्होने कहा “ माँ-बाप बच्चो को जन्म देते हैं , कर्म नहीं देते ,माँ बाप बच्चो के जीवन को उचित मोड दे सकते हैं , यह बात अपने मन पर अंकित कर यदि हम लोग अपने लड़को के साथ अपनी लड़कियो को भी शिक्षित करे तब हमारे सम्मान की उन्नति तीव्र होगी , इसलिए इस विचार को नजदीकी रिश्तेदार तक जल्दी से पहुचाना चाहिए।

महिलाओ की शिक्षा पर अम्बेडकर का काफी ज़ोर रहा इसके साथ साथ ही महिलाओ का आर्थिक सशक्तिकरण हो इस पर भी इंका ज़ोर था , 1918 मे साउथ बोरो समिति से छोटे- मँझोले प्रकार के काम धंधो को महिलाओ को खोलने मे सह्यता करने की अहम मांग अम्बेडकर ने की थी। 1928 में महिला को प्रसूती अवकाश मिले इसकी मांग अम्बेडकर ने की और सरकार से उसको मनवाया भी, हिन्दू कोड़ बिल तो महिलाओ की मुक्ति का अहम दस्तवेज था जिसका संबंध विवाह , तलाक , पिता की संपाति की वारिस होना , स्वेच्छा से विवाह करना और विछेद करना आदि से ही सम्बंधित था।

ऐसे तमाम प्रकार के कार्य अंबेडकर ने किए मजदूरो के लिए भी तमाम कार्य किया उनका वर्णन पूर्व मे किया जा चुका हैं| इनको आधार बना कर कहा जा सकता हैं की बाबा साहब अंबेडकर किसी एक जाति के वर्ग के नेता नहीं थे बल्कि वे भारत के नेता थे और भारत के राष्ट्र निर्माता थे।

देश की अखंडता और एकता के लिए

डॉ अम्बेडकर ने अपने संपूरन जीवन को समाज और राष्ट्र के भले में लगा दिया उनके जीवन एक और पक्ष पर ध्यान देने की आवश्यकता है वो है राष्ट्रीय सुरक्षा अम्बेडकर ने भारत और तिब्बत को लेकर कहाँ की “ तिब्बत भारत के लिए सामरिक माहत्व रखता वही बौध मत हमारी संस्कृति और उनकी संस्कृति के बीच वर्षो पुराना सम्बंध भी स्थापित करता है” वही जम्मू कश्मीर को विशेष दर्जा देने के प्रश्न पर अम्बेडकर ने साफ़-साफ़ माना किया की मैं ये नहीं कर सकता इसलिए सविधान के मूल में धारा 370,35a को जगह नहीं मिली अम्बेडकर ने इस सबको देख नेहरु मंत्रिमंडल से इस्तीफ़ा भी दिया।

मज़दूर नेता के रूप में

अम्बेडकर ने 1926 में मज़दूरों के अधिकारो की लड़ाई प्रारम्भ किया वही 1932 में जा कर स्वतंत्र मज़दूर दल बनाया और मज़बूती से मज़दूरों की समस्या को उठाया। अम्बेडकर के द्वारा लिए कई अहम निर्णय थे जिसमें सभी को समान कार्य के लिए समान वेतन मिले,वायसराय की काउन्सिल में श्रम मंत्री (1942) रहते हुए ,मज़दूरों के लिए काम के घंटे तय किये 27 Nov 1942 को आवाज़ उठाई ,महिला मज़दूरों के लिए विशेष व्यवस्था की बात की ,नियूनतम वेतन 1942 रोजगार कार्यालय (Employment Exchange) का निर्माण हो जिस से युवा बेरोजगार न रह सके ,कर्मचारियो का राज्यकृत जीवन बीमा (Employees state insurance) आदि की बात की।

देश में दामोदर घाटी परियोजना के जन्मदाता कोई और नहीं डॉ अम्बेडकर ही थे एक बाँध का कैसे बहूउदेशय प्रयोग हो इसका एक रोडमेप अम्बेडकर ने तैयार किया 1944।

संदर्भ सूची

1. अम्बेडकर समग्र अध्ययन , 2016, मानक पब्लिकेशन, दिल्ली
2. कीर धनंजय,डॉ बाबा साहब अंबेडकर जीवन चरित्र , 1996 , पोपुलर प्रकशन , महाराष्ट्र, भारत
3. कुमार प्रवेश “ डॉ अम्बेडकर एक अर्थशास्त्री के रूप में IDEINNEWS.COM
4. कुमार प्रवेश “राष्ट्रनिर्माता बाबा साहब डॉ अम्बेडकर ,सामाजिक न्याय संदेश” , Minister of social justice , Govt.of India , new Delhi
5. कुमार प्रवेश “संघ के विरोध में नहीं किया था अम्बेडकर का नागपुर में धर्म परिवर्तन का कार्यक्रम”, firstpost.com.
6. कुमार प्रवेश , डॉ. भीमराव राम जी अम्बेडकर एक व्यक्ति कई आयाम , वीर अर्जुन राष्ट्रीय संस्करण समाचार पत्र।
7. कुमार प्रवेश “ कब ली जाएगी जम्मू-कश्मीर के वाल्मीकि और वंचित लोगों की सुध” Panchjany.com ISSN No. 23492392.
8. कुमार प्रवेश, दलित अस्मिता की राजनीति ,2010, मानक पब्लिकेशन , दिल्ली
9. कुमार प्रवेश, दलित प्रतीक और पहचान 2012, देशना प्रकशन , दिल्ली
10. गेल ओमवेट , अंबेडकर प्रबुद्ध भारत की और (अनुवादित) 2005 , पेगुएन बुक्स, नई दिल्ली
11. ठेगड़ी , दतोपंत . बा. (2015) : डॉ अम्बेडकर और सामाजिक क्रांति की यात्रा , लोकहित प्रकशन , लखनऊ , उत्तर प्रदेश
12. डॉ अम्बेडकर , हिन्दू नारी का उत्थान और पतन, 2010 , गौतम बुक सेंटर , दिल्ली एल.आर. बाली , डॉ अम्बेडकर और हिन्दू कोड़ बिल , 1983, भीम पत्रिका पब्लिकेसं, जालंधर, भारत

13. डॉ अम्बेडकर संपूर्ण वगम्य वॉल्यूम 6,11, 13 प्रकशन विभाग भारत सरकार दिल्ली
14. सविधान सभा के वाद – विवाद , 1951 भारत सरकार
15. सहाय , (डॉ) शिवस्वरूप (2014) ; प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास (हिन्दू सामाजिक संस्थाओ सहित) , मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
16. Ambedkar, Dr.B.R.(1948), speech by the Hon'ble Dr.B.R. Ambedkar 6th November 1948
17. B.R. Ambedkar Volume: 6,19,13, Publication Ministry of Social justice, Govt. of India
18. Ghuriya, G.S.(1974) : Caste and race in India , Popular Prakshan , Mumbai
19. Jadhav, Narendra (1991), DR. Ambedkar contribution to Indian Economics, EPW, November 20.
20. Jadhav, Narendra (2013): Ambedkar speaks, Volume -1, Konark publisher, New Delhi,
21. Kumar Vivek (2002): Dalit Leaders in India, Kalpaz Prakshan House, Delhi